

गुरु नानक – सबद ३६
राती रुती थिती वार ॥
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिस विच धरती थाप रखी धरम साल ॥
तिस विच जीअ जुगत के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचार ॥
सचा आप सचा दरबार ॥
तिथै सोहन पंच परवाण ॥
नदरी करम पवै नीसाण ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥ ३४ ॥

सारः प्रकृति की विविधता दुनिया को चलाने के लिए एक दूसरे का समर्थन करती है। सबके लक्षण अलग होने के बावजूद, अंदरूनी मूल से जुड़े हुए हैं, क्योंकि सब पांच समान आवश्यक तत्वों से ही बने हैं। जब सारे नेक इरादे और सच्ची भावना से एक साथ काम करते हैं, तब सद्ग्राव पैदा होता है।

राती रुती थिती वार ॥
रात, मौसम, दिन और सप्ताह।

पवण पाणी अगनी पाताल ॥
वायु, जल, आग और पाताल लोक ।

तिस विच धरती थाप रखी धरम साल ॥

यह सभी दुनिया के कामकाज को सुविधाजनक बनाने वाले तत्व नेकी के दायरे में मिल कर काम करते हैं।

तिस विच जीअ जुगत के रंग ॥

दुनिया विविध प्राणियों से बनी है जिनका जीवन यापन का ढंग और ढब अलग-अलग है।

तिन के नाम अनेक अनंत ॥

यह विविधता असंख्य पहचानों के साथ है।

करमी करमी होइ वीचार ॥

जो अपने काम और कर्म के अनुसार विचार विमर्श करते हैं।

सचा आप सचा दरबार ॥

स्पष्ट चेतना सच्ची सभाओं को ढूँढ़ती है।

तिथै सोहन पंच परवाण ॥

स्वयं की अभिव्यक्ती करने वाले शानदार प्राणी पाँच तत्वों से मिल कर बने हैं।

नदरी करम पवै नीसाण ॥

कर्मों के अनुसार ही व्यक्ति की पहचान होती है।

कच पकाई ओथै पाइ ॥

कर्मों पर चिंतन के माध्यम से नाजुक मन आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है।

नानक गङ्गा जापै जाइ ॥ ३४ ॥

नानक कहते हैं कि आत्म-चिंतन ही मुक्ति का मार्ग है। (३४)

तत्त्वः गुरु नानक कहते हैं कि आत्म-चिंतन और हमारे सच्चे आध्यात्मिक स्वरूप को समझना ज्ञान हासिल करने का पहला क़दम है। स्वयं को एक बड़े, परस्पर जुड़े हुए ब्रह्मांडीय ताने-बाने के हिस्से के रूप में देखने से हमारे काम परोपकारी हो जाते हैं, जिससे आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com